

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwad University, Aurangabad.

Hindustani Education Society, AUSA

SHARADCHANDRA MAHAVIDYALAYA

Shiradhon, Tq. Kallam Dist. Osmanabad.



TUTORIAL BOOK

Year 2021 -2022

Prof. Name Dr. Chhotap K. D.

Signature [Handwritten Signature]

Student's Name : दागरे स्नेहल संजय

Class : B.A. f.Y.

Subject: History Paper III

Date : 1 / 12023

→ ✨ मराठ्यांचा इतिहास ✨ ←

पानिपतच्या निसच्या युद्धाच्या पराभवाची कारणे स्पष्ट करा?

→ 14 जानेवारी 1761 रोजी पानिपतच्या ऐतिहासिक लढाऊ मध्ये मराठे - पठान यांच्यात भारताच्या प्रभुत्वावर महान युद्ध झाले. या युद्धाने भारताच्या इतिहासावर गंभीर परिणाम केले. या युद्धाने पुढील कारणे जबाबदार ठरतील.

1) उत्तर भारताच्या मराठ्यांचा प्रवेश:- शिवजी शिवकाळापासून मराठ्यांचा आदर्श मुसलमानी सत्तेचा विनाश करून स्वराज्य व सुराज्य करवण्याचा होता. पेशव्यांनीही शिवाजीराजांचे स्वप्न साकार करण्यासाठी अधिक प्रयत्न सुरू केले. परंतु दक्षिण भारत आबांडून उत्तर भारताच्या राजकारणात मराठ्यांनी प्रवेश करताना तेथे पुर्वीपासून ठाण भांडून बसलेल्या

राजे - महाराजे व नवाबांना ते असह्य झाले. सत्तेकरीता त्यांचे मराठ्यांशी खटके उडू लागले.

२) दिल्लीची मध्यवर्ती सत्ता शीत :-
 अरंगजेबाच्या मृत्युनंतर मोगल बादशाही शीत झाली. दिल्लीच्या सिंहासनावर बसलेले मोगल बादशाहा कमकुवत होते. पेशव्यांनीही शिवाजीराजांचे स्वप्न त्यांचे प्रांतीय सुभेदार या दुर्बलतेचा फायदा घेऊन स्वतंत्र होण्याचा प्रयत्न करू लागले. मध्यवर्ती सत्ता शीत होतानाच परकीय आक्रमकांना देखील भारताने स्वारी करूयासाठी स्फुरण चढले. त्यांचा परीणाम म्हणजे नादिरशाहा, अहमदशाहा अब्दाली यांच्या स्वान्या या देशावर झाल्या. या दोघांच्या स्वाभ्यांनी दिल्लीची पारळभुळे खिळखिळी केली. या स्वाभ्यांना तोंड देण्याचे सामर्थ्य मोगलांमध्ये राहिले नाही.

३) मराठा - अब्दाली वाद :-

नादिरशाहाच्या मृत्युनंतर त्यांचा वारस म्हणून आक्रमकाप्रमाणे अहमदशाहा अब्दालीने अनेक स्वाभ्या



TOPIC

Date: / /

Page No.:

कुरुन पंजाबवर आपला अधिकार स्थापन केला होता. अहमदशाहच्या हातुन पंजाब कातुन घेव्यासाठी रघुनाथरावाने अटकेपार स्वाऱ्या केव्या होऱ्या. त्यामुळे पंजाबचा नाबा हा मुद्रदा दंघीन मराठे - अब्दाली यांच्यामधील वादाचा मुद्रदा होता. त्यांच्यामधील नंट्याचे ते एक कारण होऱे.

4) मराठ्यांची सफदरजंगाना मदत :-
अंघोड्येचा वजीर सफदरजंग व रोहिले सरदारांत बेमनस्य निमणि होऊन त्यांच्यांत इ.स. 1748 मध्ये संघर्ष सुरु झाला. रोहिल्यांचा बंदोबस्त कुरुव्यासाठी सफदरजंगाने मराठ्यांची मदत मागितली होती. मराठ्यांनी रोहिल्यांचा पराभव केव्यामुळे त्यांनी आपला जानभाई अहमदशाह अब्दालीकडे मदतीची याचना केव्या होती. अहमदशाह अब्दालीने त्यांच्या विनंतीस प्रतिसाद दिना.



Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwad University, Aurangabad.

Hindustani Education Society, AUSA

SHARADCHANDRA MAHAVIDYALAYA

Shiradhon, Tq. Kallam Dist. Osmanabad.



TUTORIAL BOOK

Year 20²² -20²³

Prof. Name Dr. वसुधैव कुटुम्बकम् K.L.

Set No : BA6914053

Signature [Signature]

Student's Name : अश्विनी प्रतिष्ठा बोडकर

Class : B.A.S.Y.

Subject : इतिहास Paper VI

Date : / / 20

✓. मध्युगीन भारताचा इतिहास,

सन्ताष्टाश्यास नको असलेली माहिती काढून हाकलेली व असत्य वण त्यास ह्या असलेली माहिती या इतिहास ग्रंथात समाविष्ट केलेली अस. यामुळेच आंगणवाड्या आत्मगौरवाभ्यात दिलेल्या प्रहस्या आकार लघाच्या हाकलेली विवादाने वायिरून खानावर घावलेल्या हस्या व सुरतेचा मुट ही दोन महत्वाचा प्रकरण अढकत नदित. तारीख व मजसूर हे ग्रंथ तयार करतात. ग्रंथकृत्याने त्याच विषयावरील कडक पुणे क्वचित कागदपत्र पाहून लेखन केलेले असत.

आठराव्या शतकात शतकात सिद्दीय्या मजसूररूपाने किंवा खानान-इ-आमीर अशासारखे ग्रंथ घेतले, तर त्यात दिलेल्या माहिती पूर्वसुराच्या अनेक ग्रंथातून घेतल्या असल्याच ठाळून येत. याउपट सुतखल्लुसमुय्या ह्या ग्रंथाचा खोकी खानान कित्येक ठिकाणी स्वतः पाहून वणत केलेल्या कुंकु हाकलेली आता जवळजवळ संशयास्पद ठरलेल्या आहेत. ग्रंथ सिद्दीय्या वर निर्दिष्ट केलेल्या वादी पद्धतीचे किंवा धार्मिक दृष्टी या पक्षघात नसेल, तर त्यात सत्य माहिती अधिक प्रमाणात यण्याच संभव अस. अशा वखल्लुच्या मुनीन फारसी ग्रंथात आलेली माहिती अधिक तपशीलवार असत. फारसी ग्रंथ व सराउ वखरा ह्यांमध्ये.



Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwad University, Aurangabad.

Hindustani Education Society, AUSA

SHARADCHANDRA MAHAVIDYALAYA

Shiradhon, Tq. Kallam Dist. Osmanabad.



TUTORIAL BOOK

Year 2022 -2023

Prof. Name Dr. Sayyad A. F.

Signature [Signature]

Student's Name : Surwase shweta sudhir

Class : B.A. first year

Subject: Hindi Paper III

Date : 28/ 3 /2023

9. 'पुस की रात' कहानी की कथावस्तु स्पष्ट कीजिए।

→ 'पुस की रात' कहानी में प्रेमचंद ने एक बड़ी दर्दनाक कहानी पेश की है। इस कहानी से पैदा होनेवाला प्रभाव इन्सान की बेवसी और मजबूरी के दर्द से दिल को तड़पाता है। शुरू में हल्कू जिस तरह अपनी बीवी को डाँट-उपटकर और बहला-फुसलाकर कखल के लिए जमा किए जमा किए हुए तीन रुपए सहना को दे देता है, पुस की कड़कड़ी सरदी तरह को वही से जफडने लगती है। हल्कू जिस तरह बार-बार मुन्नी (पानी) से खुशामदाना लहजे में बात करता है और मुन्नी जिस तरह चसक कर बोलती है और अपना तीखा रवैया अपनाती है, इससे 'बलिदान' के गिरधारी की बीवी सोभागी को और 'गोदान' के धनिया की शाद ताजा हो जाती है जो अपने तेज लहजे से समाज का नग्न चित्र प्रस्तुत करती है। प्रेमचंद के किरदारों में कभी जान बिछाई देती है तो सिर्फ औरतों में। नाइन्सफियों से लडने की किसी में शक्ति है तो वह औरतों में ही है।

जैसे मुन्नी हल्कू से कहती है -

"मैं कहती हूँ, तुम खेती क्यों नहीं छोड़ देते ? मर-मरकर काम करो, पैदा-वार हो तो उससे बाकी अदा करो। चलो छुट्टी हुई। बाकी न्युकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है। मैं रुपया न दूंगी, न दूंगी।"

"तो क्या गानियाँ खाऊँ ?"

"गाली क्यों देगा, क्या उधंका राज है ?"

आखिर में भी वह उसी उत्साह से कहती है, "मैं इस खेत का लगान न दूंगी। कहे देती हूँ कि जाने के लिए खेती करते हैं, मरने के लिए नहीं। हल्कू के पास एक कुत्ता है जिसका नाम जवरा है। जवरा हल्कू के खेत का एकमात्र मददगार है। एक जैसी ऐसी अँधेरी रात में जब आसमान पर तारे भी

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwad University, Aurangabad.

Hindustani Education Society, AUSA

SHARADCHANDRA MAHAVIDYALAYA

Shiradhon, Tq. Kallam Dist. Osmanabad.



TUTORIAL BOOK

Year 2022 -2023

Prof. Name Dr. Jalve Sir

Signature 

Student's Name : Jyoti Anant Kamble

Class : B.A.F.Y.

Subject : hindi (SL) Paper II

Date : 6/4/2023

नाव : कांबळे ज्योती अनंत
 विद्यालयचे नाव : शरदचंद्र महाविद्यालय शिरोदीर्ग
 वर्ग : B.A.F.Y.
 विषय : हिंदी (SL)
 आसन क्रमांक :

B	A	B	2	1	6	3	8	7
---	---	---	---	---	---	---	---	---

1] अमीर खुसरो की पहलियों को विश्लेषित कीजिए। अथवा
 अमीर खुसरो की पहलियों में व्यक्त लोकतन्त्र को
 विश्लेषित कीजिए।

उत्तर : अमीर खुसरो खड़ी बोली हिंदी के आदि कवि माने
 जाते हैं। लगभग १३ वीं १४ वीं शताब्दी उन्होंने खड़ी
 बोली का प्रारंभ किया। उनका वास्तविक नाम अबुल
 हसन था, परंतु वे अमीर खुसरो इस नाम से ही
 साहित्य जगत में लोकप्रिय हो गए। अरबी, फारसी,
 तुर्की तथा हिंदी के गहरे जानकार थे। रचनाकार के
 साथ-साथ वे एक अच्छे गायक भी थे। हिंदी
 गजलों को गाकर लोकप्रिय बनाने का श्रेय खुसरो
 को दिया जाता है।

सावन, बरखा, फागून आदि ऋतुओं पर
 लिखे उनके गीत लोगों की जुबान पर चढ़ गए हैं।
 सूफी दरगाह में उनकी कव्वालियाँ खूब लोकप्रिय हुईं।
 फारसी भाषा हिंदी भाषा के पहले शब्दकोश 'खलिकबारी'
 या 'निसाबे की रचना' का श्रेय भी अमीर खुसरो
 को ही दिया जाता है। वे एक साथ साहित्यकार,
 इतिहासकार, संगीतज्ञ तथा सूफी विचारधारा के साधक
 और योद्धा थे। उनकी पहलियाँ, दो सूखने, निसबने,
 अनमेलियाँ, ढकोसले, मुकरियाँ, सूफी विचार-
 धारा के साधक और योद्धा थे। उनकी
 पहलियाँ, सूफी सखियाँ, दोहें, हिंदवी गीत या



TOPIC

Date: / /

Page No.: 1

Name :- pathan Nikhat Laydkari

Seat Number :- 1001105331

Class :- B.A.F.Y

College :- Shaheedchandra Art college shivadhan

Semster :- I - SL - I

17
09
10



انگریزی سے اردو ترجمے کی روایت

اردو زبان کو جلا اور ترقی یافتہ بنا سنے کے
 عمل میں انگریزی سے ادب عالیہ کے پرچم سے بہت
 اہم کردار ادا کیا ہے۔ جس سے اردو زبان کے نشری
 اسالیب اور شرفی سیرائی، اظہار با الغصہ اور نظم میں
 نمایاں تبدیلیاں رونما ہوئیں۔ یہ اٹھارویں صدی عیسوی
 کا زمانہ کا زمانہ بنتا ہے۔ جب انگریزی سے اردو میں پرچوں
 کی ابتدا مثنویوں سے خاصا مزہا مقام سے تحت کی
 1856ء میں ہندوستان میں انگریزی سے اسراج کے قدیم
 جہا سے ہیں۔ ترجمہ سے کام کی بہت دور دوری افترائی
 گئی جس کا اہم مقصد انگریزی زبان سے جلا بہت کو پر
 مدعنی کی مقامی زبان اردو میں ترجمہ کیا جا سنے۔ اس سلسلہ
 میں شخصیات اور ادواروں کی بلتھناریت قابل ذکر ہے
 افراد میں نواب شمس اللہ اور شاہ ارد کہ کا نام لیا جاتا
 ہے۔ اور (1821ء تا 1855ء) سیا سلفکا سنو سا سٹی (1873ء)
 ڈوگر کی انجینئرنگ کالج (185ء تا 1888ء) انجنینئرنگ
 (1880ء تا 1900ء) دارالستر جمہ جا معہ عشا بنیہ حیدر آباد
 وکن (191ء آٹنا 1928ء) کا نام سر فرست ہے۔ (2)
 جبکہ خازمی پورا اور سہار میں جرایر علوم و فنون
 سے سادہ سادہ مغربی ادبیات کو اردو میں
 متقل کر سنے کا کام نہیں زیادہ ہوا۔ (2)
 علاوہ ازیں پھار سے بااں ادبی تراجم
 کی تالیف میں اسلس از داسٹر سمیو نیل

Name :- Pathan Sameer Jabbar

College :- Sharad chandra art college, Shiradhon

Seat No :- 1001105332

class :- B.A. F.Y

Semester :- I - S.I.

59/10

انگریزی سے اردو ترجمہ کی روایت

خالہ اقبال

اردو زبان کو جدید اور ترقی یافتہ بنا کر عمل میں انگریزی سے ادب عالیہ کے تراجم نہ بنے، الیم کر پار ادا کیا ہے جس سے اردو زبان کے فنی اسالیب اور شعری پیدا کیے انظار یا انحصار سے نظم میں نمایاں تبدیلیاں رونما ہوئیں۔ یہ ادواروں میں ۱۹ویں صدی کے وسطیٰ کا زمانہ بنتا ہے جب انگریزی سے اردو میں ترغیوں کی ابتداء مشنریوں نے خاص مذہبی مقاصد کے تحت کی ۱۸۵۷ء میں پندرہ سو سال میں انگریز سامراج کے قدم ڈانڈی تھے کہ کام کی بہت، حوصلہ افزائی کی گئی۔ جس کا الیم مقصد انگریزی زبان سے جدیدیت کو برصغیر کی مقامی زبان اردو میں ترغیہ کیا جائے۔ اس سلسلے میں شخصیات اور اداروں کی پیش رفت قابل ذکر ہے۔

افراد میں لغزب شمس الاثر اور شاہ اودھ کا نام لیا جاتا ہے اور اداروں میں فورٹ ولیم کالج، دہلی، کالج (۱۸۴۱ء تا ۱۸۵۵ء) و سائنسک سوسائٹی، ڈھکی انجینئرنگ کالج، (۱۸۵۵ء تا ۱۸۵۵ء) انجمن پنجاب



Name :- Shaikh Shohabkhan Baba.

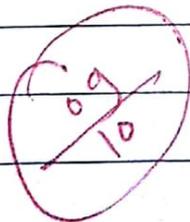
College :- Sharadchandra Aet. College. Shirdi.

Seat No :- 1001105349.

Class :- B. A. Eng.

Semester :- I.

S. U. B :- Urdu.





اصول تفتیح :

شاعروں کا تجزیہ کرنے کے پیشیادی بجز "الفاظ، لفظوں کی حرکات و اظہار لفظی اور حرف میں۔ الفاظ، حروف سے ملکر بنتے ہیں اور حرکات حروفوں کے ملنے سے۔ بحر تفتیح کے لیے لفظوں کی حرکت کا جانا بہت اہم ہے۔ معروض، شعروں اور شاعروں کا تجزیہ کرنے کے لیے معرفت کو حرکات میں توڑا جاتا ہے۔ ہر لفظ کو ایک میں توڑنے کے لیے تین اصول استعمال کیے جاتے ہیں۔

- 1- حرکت، ایک یا دو حروف کا مجموعہ کو کہتے ہیں۔
- 2- جہاں تک ممکن ہو اصول حروف تفتیح سے شروع ہوں۔
- 3- حرکت یا بتیاد لفظ اور آوازوں پر ہے۔

اصول نمبر 1: اصول ایک یا دو حرف کا مجموعہ ہے۔
یہ حرکات بنا سکتے ہیں۔

1) اردو کے تمام حروف تفتیح الف سے لے کر حروف تفتیح تک ہیں۔

سوائے کہ اور ان کے۔



Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwad University, Aurangabad.

Hindustani Education Society, AUSA

SHARADCHANDRA MAHAVIDYALAYA

Shiradhon, Tq. Kallam Dist. Osmanabad.

08
/
10



TUTORIAL BOOK

Year 20 22 -20 23

Prof. Name डॉ. अन्तर ए. एव.

Signature [Handwritten Signature]

Student's Name :	<u>अंबिकर प्रतिक्षा औंडवर</u>
Class :	<u>B.A.S.Y</u>
Subject :	<u>भरती (V)</u> Paper <u>III</u>
Date :	<u> / / 20</u>

* चरित्र *

* संत तुकाराम *

संत तुकारामांच्या जन्माविषयी लोकांमध्ये अनेक मतभेद आहेत. तुकारामाची जन्म महाराष्ट्रातील फुल जिऱ्यात असल्याचे देह गावात ज्ञाना. त्यांच्या जन्माचे वर्ष इ.स १५६८ ते इ.स १५६९ व १६५० र्हा असा सांगितले जाते. त्यांचे वराण मीर आणव आडनाव अविसे होते. तुकाराम यांच्या वडिलांचे नाव कुन्हावा आणि आईचे नाव कुंजई होते. तुकावां ताने भावंडांमध्ये मध्यम होते. मोठा भाऊ शिवजी तर वीरुड्या भावाचे नाव कुन्हावा होते. तुकावांचा मोठा भाऊ कुन्हावा होते तुकावांचा मोठा भाऊ शिवजी विरक्त वृत्तीचा होता. त्यामुळे वरुणा संतूणा जलावहारी तुकावावरच होता.

तुकारामाचे वडिल कुंजी समाजाचे असल्याने स्वतःचा व्यवसाय व लोकांना उदार पैसा देण्याचे काम करत असत. ते भगवान विठ्ठलाचे रूप मीठ भक्त होते.



Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwad University, Aurangabad.

Hindustani Education Society, AUSA

SHARADCHANDRA MAHAVIDYALAYA

Shiradhon, Tq. Kallam Dist. Osmanabad.



TUTORIAL BOOK

Year 20 22 -20 23

Prof. Name डॉ. कारुण तीलोडी

Signature [Handwritten Signature]

Student's Name : अनविकर प्रतिष्ठा औडंवार

Class : B.A.S.Y.

Subject : भारत (SL) Paper III

Date : 1 / 120

मृत्युंजय (कादंबरी)

महाभारततीय 'कृष्ण' या
 लोकार्थेवर आहारात विवाजा सावंत यांना
 मिळाल्या कादंबरी सादर 28 9 2023 रोजी या
 पुरस्काराचा 'भारतीय ज्ञानपीठ' या
 संस्थेतर्फे मूलदेवी पुरस्कार जाहीर झाला.

महाभारततीय सामान्यतः खामनायक
 म्हणून परिचित आहोत. नायक असूनही वहुतांशा
 संगतीकडे लक्ष देऊन खामनायक भूमिती. पण खामनायक
 सावंत लिखित "मृत्युंजय" कादंबरी हाती घेतला.
 आणी जणू कृष्णसि जिवन नव्यान माझ्या
 मनात अमिडय रावत. कृष्णसारखा दानधर या
 भूमीवर कथित नव्हता हे वर रक्षकसाम्या नव्हतीवरून
 सिद्ध झालेच. अशा आनक परिचित अपरिचित
 प्रसंगांशी आपुला उदाह जपकून आकृष्य कृष्ण
 देते हे कादंबरी मरुहा साहज्यास विवाजा
 सावंत यांमकून मिकायसा आणखी एक देणगी.

कुरुक्षेत्रावर लडून असलेल्या
 कौरव - पांडवांच्या लढ्यातून लो सतरावा दिवस.
 वेळ जवळ जवळ सुरुवातीचा कौरव आणी पांडव
 या लढ्या पक्षातील थोडे सार राहिले वसे.
 अमार जमिनीवर रक्तीत न्हायसा मूहावर कुवा
 मृत्युच्या दाराल आणी आसपास सभावतासा
 पडला हाता मृत सैनिकाचा रक्तीतवळ
 झाल्या प्रतांचा खंय... इथे
 कृष्णाचा वेगट पडाल उभ्या



Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwad University, Aurangabad.

Hindustani Education Society, AUSA

SHARADCHANDRA MAHAVIDYALAYA

Shiradhon, Tq. Kallam Dist. Osmanabad.



TUTORIAL BOOK

Year 20 -20

Prof. Name प्रा. हाकणे वी. एस.

Signature [Handwritten Signature]

Student's Name : लोमट वेळोती उमाकाव
Class : B-A-F-4 Seat N: BAB 216398
Subject: Public Administration Paper III
Date : 8 / 4 / 2023

→ ① केंद्री करणामध्ये नियंत्रण कर्त्याची सत्ता केंद्रित झाल्यामुळे स्थानिक पदाधिकार्यांच्या स्वच्छाचारित्या भाळा बसतो. याउलट विकेंद्रीकरणाने स्थानिक पदाधिकार्यांत अहंकार व स्वच्छाचारिता बळवते.

② केंद्रीकरणामुळे प्रशासनात एककूपता, एकवाक्यता, एकसुत्रता निर्मिती होते यामुळे जनहित व राष्ट्राची प्रगती साधली जाते. राष्ट्रीय एकात्मता निर्मिती होते. याउलट विकेंद्रीकरणामुळे प्रशासनात असमानता निर्मिती होते.

घोरशाच्या समयवजावणीत विविधता भाषस्थाने जनहित आणि राष्ट्राच्या प्रगतीला धोका पोहोचतो. विकेंद्रीकरणामुळे राष्ट्रीय एकात्मता नष्ट पावते. ③ केंद्रीकरण इकूमशाहीला पोषक असते. विकेंद्रीकरण याकशाहीला पोषण असत.

④ केंद्रीकरण राष्ट्रीय नियोजन व राष्ट्रीय संरक्षण यासाठी उपयुक्त ठरते. विकेंद्रीकरणामुळे राष्ट्रीय नियोजन व राष्ट्रीय संरक्षण यासाठी उपयुक्त ठरत केंद्रीकरणामुळे राष्ट्रीय नियोजनात व राष्ट्रीय संरक्षणात अडथळे येतात.

⑤ केंद्रीकरणामुळे स्थानिक प्रश्नांकडे दुर्लक्ष होते. विकेंद्रीकरणामुळे स्थानिक समस्या स्थानिक पातळीवरून सोडविण्या जातात.

⑥ केंद्रीकरणामुळे पत्तार, विरगाई व अकार्यक्षमता वाढते. विकेंद्रीकरणामुळे कार्य तत्परतेने व विनाविळखेने केले जाते.

⑦ केंद्रीकरणामुळे प्रशासनात अपरिवर्तनीयता येते व प्रशासन व्यवस्था परिस्ट (Rigid) बनते. केंद्रीकरणामुळे प्रशासनात स्थूल कामपारतप परिवर्तनास वाव मिळते.

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwad University, Aurangabad.

Hindustani Education Society, AUSA

SHARADCHANDRA MAHAVIDYALAYA

Shiradhon, Tq. Kallam Dist. Osmanabad.



TUTORIAL BOOK

Year 2022 -2023

Prof. Name प्रा. वी. एम. नळगे

Signature [Handwritten Signature]

Student's Name : प्रति प्रशोक कुसुंबे
Class : B.A.S.N II
Subject: लोकप्रश्न Paper VII
Date : 30/12/2023

लोकशासन

1) भारतातील संसदेच्या वरिष्ठ सभागृहाची रचना आणि अधिकार स्पष्ट करा.
 → राज्यसभा हे भारतीय संसदेचे किंवा द्वितीय सभागृह आहे. भारतीय राज्यांमधील संघराज्य पद्धती स्वीकार करण्यात आला. त्यामुळे संघराज्यातील घटक राज्यांच्या पुतिनिधि त्व देण्यासाठी वरिष्ठ सभागृहाची किंवा द्वितीय सभागृहाची होती. त्यामुळे भारतीय संसदेत राज्यसभेची व्यवस्था करण्यात आली आहे.

① राज्यघटनेतील तरतुद :-

राज्यघटनेच्या पात्रता, कलम 80, 83, 84, 89 व 92 राज्यासभेची रचना, सभासदांची संख्या, सभासदांची पात्रता, निवडणुका, अधिकार, कार्यकाल, सभागृहाचे अधिकार इत्यादीचे वर्णन आहे.

② राज्यसभेच्या सभासदांची संख्या :-

राज्यसभेच्या कलम 80 नुसार राज्यसभेच्या सभासदांची संख्या सभासदांची जास्त 250 असू शकते. त्यापैकी 238 सभासद निवडा आलेले असतात आणि 12 सभासदांची नेमणूक राष्ट्रपतीने केलेली असते. राष्ट्रपतीने नेमलेल्या 12 सभासदांमध्ये कला, शास्त्र, साहित्य, समाजसेवा इत्यादी क्षेत्रातील विशेष केलेल्या व्यक्तींचा समावेश असतो. राज्यसभेतील निर्वाचित सभासदांची निवडणुका राज्यातील विधान सभेच्या प्रमाणानुसार व 20 लाख लोकांना असणे प्रमाण असते.

③ सभासदांची पात्रता आणि अपात्रता :-

राज्यघटनेच्या कलम 84 व कलम 102 मध्ये राज्यसभेच्या सभासदांची व अपात्रता स्पष्ट करण्यात आली आहे. राज्यसभेच्या सभासदांच्या पात्रता मध्ये पुढील सामवेद आहे.